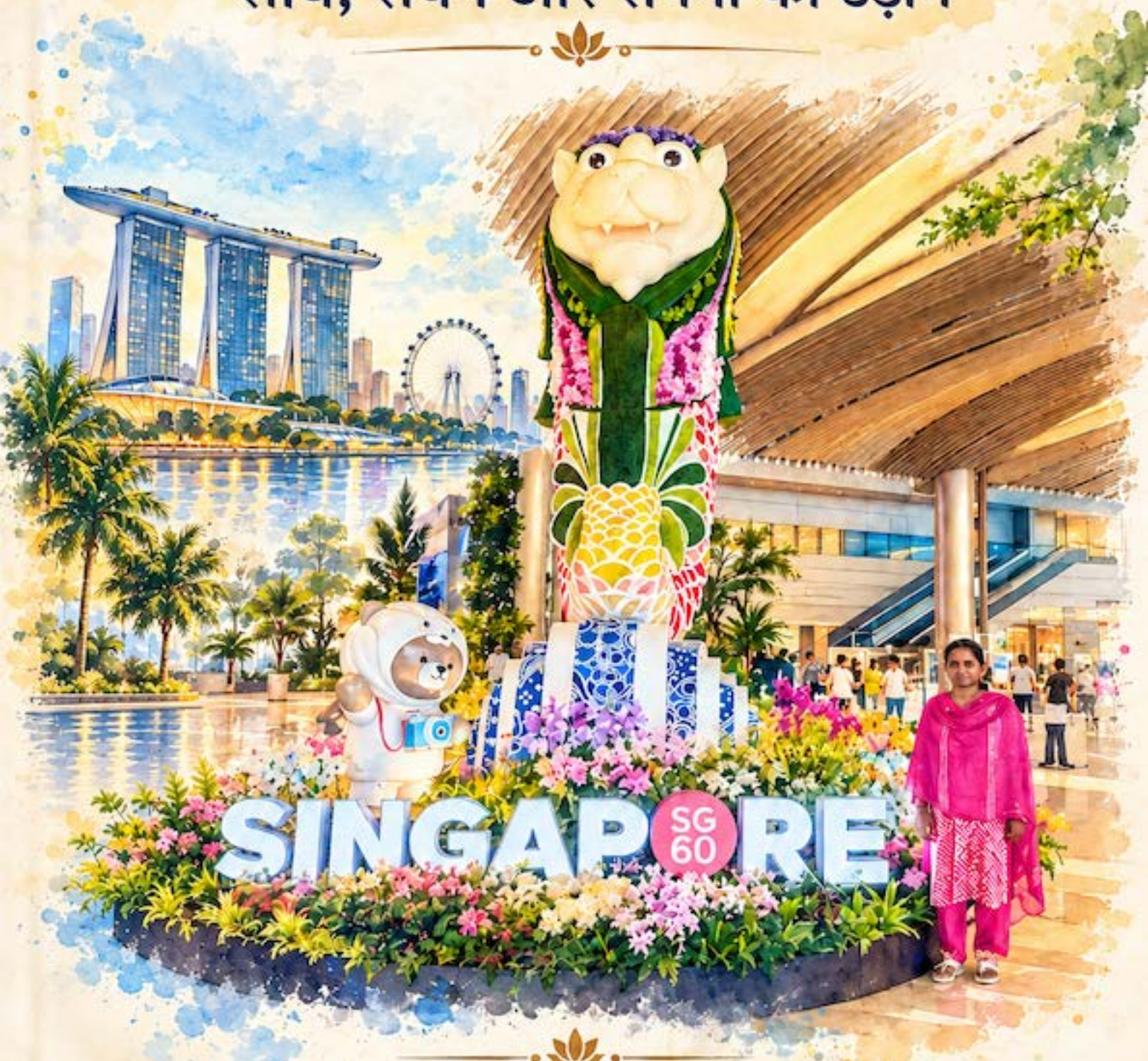


सिंगापुर

शोध, संघर्ष और सपनों की उड़ान



डॉ. अमिता

सिंगापुर

शोध, संघर्ष और सपनों की उड़ान



डॉ. अमिता

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अक्टूबर, 2026

© डॉ. अमिता

ISBN: 978-81-69716-60-4

भूमिका

पहली उड़ान सिंगापुर की

यात्रा वृत्तांत पढ़ना सदैव रुचिकर और ज्ञानवर्धक होता है और जब यह वृत्तांत प्रथम विदेश यात्रा का हो तो कौतूहल अधिक बढ़ जाता है। प्रथम विदेश यात्रा की कल्पना और उसके साकार होने के बीच का अंतराल कई मायनों में चुनौतीपूर्ण होता है। यात्रा पूर्व की शुरुआती बाधाओं से पार पाने के लिए कितने जतन करने पड़ते हैं। ये जतन जब सफल हो जाते हैं तो प्रथम विदेशी यात्रा का रोमांच सर पर चढ़कर बोलता है। डॉक्टर अमिता ने अपनी प्रथम विदेश यात्रा पर केंद्रित पुस्तक "सिंगापुर: शोध, संघर्ष और सपनों की पहली उड़ान" के माध्यम से सिंगापुर यात्रा का रोचक वर्णन पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। पुस्तक का पहला अध्याय यात्रा की प्रारंभिक तैयारी के रूप में पासपोर्ट बनाने में आने वाली व्यवस्थागत परेशानियों और नियमों की आड़ में तानाशाही रवैये को बखूबी रेखांकित करता है तो आगे के अध्याय सिंगापुर के दर्शनीय स्थलों के साथ ही आदर्श शहरी मानकों पर खरा उतरने वाले शहर की उत्तम व्यवस्था का बखान करते हैं।

अमिता जी ने सिंगापुर की उन छोटी-छोटी खूबियों पर भी प्रकाश डाला है, जो सिंगापुर की विशेष पहचान हैं। नियमों का पालन, सफाई व्यवस्था और सामाजिक जागरूकता के पैमाने पर उन्होंने सिंगापुर की विशेष पड़ताल की है।

दर्शनीय स्थलों के बाह्य रूपों का वर्णन प्रस्तुत करने के साथ ही उनके दार्शनिक पहलुओं से भी लेखिका ने पाठकों को परिचित कराया है। वे यह भी स्पष्ट करती हैं कि विकास और पर्यावरण एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं। यदि दूर-दृष्टि हो तो आधुनिकता और प्रकृति साथ-साथ चल सकते हैं। यह पुस्तक केवल एक यात्रा-वृत्तांत नहीं है, अपितु सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक अनुशासन और आर्थिक प्रगति जैसे अनेक मुद्दों को संक्षेप में पाठकों के समक्ष रखने का प्रयास भी है। पुस्तक के माध्यम से लेखिका ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि दूरदर्शी नेतृत्व, परिपक्व प्रशासन और देशवासियों का अनुशासन किसी भी राष्ट्र को नई ऊंचाई तक ले जा सकते हैं। एक और बात। मेरे मत में यह पुस्तक उन भारतवासियों को भी कुछ बोधपाठ जरूर दे सकती है, जो स्वयं को देश के विधि-विधान से बहुत ऊपर मानते हैं। अमिता जी को उनके इस प्रयास के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

डॉ. जवाहर कर्नावट

निदेशक,

अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र,

रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

मो. 75063 78525

मेरी बात

अक्सर लोग कल्पना की दुनिया में सैर करते हैं और अपने सपने को साकार करने के लिए हर संभव कोशिश भी करते हैं। इसीलिए भारत में “ख्याली पुलाव पकाना” या हवा में पुल बांधना मुहावरा बहुत प्रसिद्ध है। यह कल्पना अथवा पुल या पुलाव किसी भी चीज़ से जुड़ी हो सकती है, विदेश यात्रा से भी जुड़ जाती है। अधिकांश लोगों का यह सपना होता है कि जिंदगी में कम-से-कम एक बार विदेश की धरती के लिए उड़ान भरे और वहां की जिंदगी का आनंद ले, फिर चाहे वह अमीर हो या गरीब। यह बात अलग है कि सबके ऐसे सपने पूरे नहीं होते। ऐसे सपनों का ही चक्कर होता है, जिसकी वजह से लोग अक्सर ठगी या फिर किसी गलत संगति के भी शिकार हो जाते हैं। विदेश जाना—यह शब्द मेरे लिए हमेशा से एक मिश्रित भावना लेकर आता था। एक ओर उत्साह, रोमांच और एक नई दुनिया को देखने की चाह, तो दूसरी ओर अनजाना डर। विदेश, शब्द मेरे लिए हमेशा एक कौतुहल का विषय रहा है। एक ओर आकर्षण, दूसरी ओर भय। बचपन में देखी फिल्मों ने विदेश को एक ऐसी जगह के रूप में प्रस्तुत किया था, जहाँ संघर्ष अधिक और अपनापन कम होता है। मैंने ‘नाम’ फिल्म कई बार देखी थी, जिसमें मुख्य पात्र के रूप में संजय दत्त की भूमिका के माध्यम से विदेश की जो जिंदगी सिनेमाई परदे पर उकेरी गयी थी, उससे तो विदेश के नाम से भी डर लगने लगा था। विशेषकर इस फिल्म ने मेरे मन में एक ऐसी छवि बना दी थी कि विदेश जाना मानो अपनों से दूर

होना है। मुझे ऐसा भी लगता था कि विदेश की जिंदगी नरक की तरह बन जाती है, जहां अकेलेपन के साये में सिमटकर लोग ऐसी गलत चीजों में उलझ जाते हैं जो उन्हें न जीने लायक छोड़ता है न मरने लायक। इस फिल्म ने मेरे मन में विदेश की धरती की जो छाप छोड़ी थी, वह संघर्ष और अकेलेपन से भरी थी। ऐसा लगता था, जैसे विदेश जाना, अपनी पहचान से भी दूर हो जाना है और खुशी से ज्यादा संघर्ष है तथा भीड़ और कामयाबी से ज्यादा तन्हाई है। लेकिन दूसरी तरफ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और बाबा साहब भीमराव अंबेडकर सहित अनगिनत महापुरुषों तथा स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन को भी पढ़ा और देखा जिन्होंने विदेश की धरती पर जाकर ही सामाजिक क्रांति की नींव रखी। उन्होंने विदेश की धरती में किया जो अनुभव अथवा जो सीखा उससे देश की दशा और दिशा बदलने का काम किया। देशवासियों को जागरूक किया। समाज में क्रांति के बीज बोये। इसलिए जीवन के किसी कोने में विदेश देखने की इच्छा जीवित रही और सोचती रही कि एक दिन मैं भी उस दुनिया को अपनी आँखों से देखूँगी, जिसे अब तक केवल परदे पर देखा था और किताबों में पढ़ा था। वहां से मैं भी कुछ सीख सकूँ, समाज को कुछ दे सकूँ, बस कुछ ऐसे ही उद्देश्यों के साथ हम सिंगापुर जाने के रास्ते पर आगे बढ़ चले थे।



01

वीज़ा की क़वायद

भाग- एक

सिंगापुर की यात्रा हमारी, मतलब मेरी और मेरे पति-डॉ. संतोष कुमार बघेल की, पहली विदेश यात्रा थी। लेकिन हम बसने के इरादे से नहीं बल्कि शैक्षणिक कार्य और भ्रमण के उद्देश्य से जा रहे थे। इस यात्रा के सबसे बड़े सूत्रधार मेरे एक मित्र-डॉ. रामावतार यादव बने। मौका था- इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर मीडिया एंड कम्युनिकेशन रिसर्च (आईएएमसीआर) के कांफ्रेंस का जो 2025 में सिंगापुर के 'नानयांग तकनीकी विश्वविद्यालय' के 'वी किम वी स्कूल ऑफ़ कम्युनिकेशन एंड इनफार्मेशन कॉलेज ऑफ़ ह्यूमननिटीज, आर्ट्स एंड सोशल साइंसेज' में आयोजित किया गया था।

इस कांफ्रेंस के लिए हमने अपना जो शोध पत्र भेजा था, उसके स्वीकृत होने का इंतजार था। इसकी स्वीकृति मार्च 2025 में आयी जिसके बाद हमने यह निर्णय लिया कि हम लोग शोध पत्र प्रस्तुत करने सिंगापुर जाएंगे। मुझे उत्तराखंड में आये हुए कुछ ही महीने हुए थे, लेकिन यहाँ की कई समस्याओं से मैं लगातार रूबरू हो रही थी। मेरा शोध पत्र उत्तराखंड में जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले पलायन को मीडिया किस प्रकार कवरेज देता है, इसको लेकर था। उत्तराखंड की वादियों में बिताए मेरे शुरूआती दिन प्रकृति की सुंदरता के साथ-साथ संघर्षों की वास्तविकता से भी भरे हुए थे। हर दिन यही लगता कि यहाँ से जल्दी चला जाना चाहिए क्योंकि यहाँ जीवन आसान नहीं लग रहा था। ऑफिस आने-जाने तक के लिए कोई यातायात के साधन तक उपलब्ध नहीं थे। रोजमर्रा के जीवन में कई दिक्कतें रोज